

Q. जैव-विविधता से क्या समझते हैं ? इसके महत्व, खास संवर्धन के उपाय बतायें ?

Ans. भौगोलिक क्षेत्र में पाये जाने वाले जीवों की संख्या और आनुवंशिक, प्रजातियों, समुदायों और पारिस्थितिकी तंत्र के स्तरों पर सजीव वस्तुओं के संरचनात्मक एवं कार्यात्मक विविधता को जैव-विविधता कहते हैं।
जैव-विविधता शब्द का प्रयोग नायर तथा रेजेन (1985) ने सर्वप्रथम किया। भारत विश्व के 18 वें विविधता प्राप्त देशों में से एक है। जहाँ दो प्रमुख समृद्ध केन्द्र पूर्वी हिमालय और पठार हैं। भारत में वैज्ञानिक रूप से वर्णित 1,25,000 से अधिक प्रजातियाँ और 4,00,000 से अधिक अवर्णित प्रजातियाँ पाई जाती हैं। जिनमें अन-विश्लेष्य जीव परिवर्तनशीलता के गुण मौजूद हैं और जो 3,287 मिलियन हेनरीचर भू-भाग और 200 मिलियन हे० आर्थिक जीव में फैले हुए

महत्व =>

(i) जैव-विविधता के पारिस्थितिकी भूमिका => (Ecological Role of Biodiversity). किसी पारिस्थितिकी तंत्र का स्थायित्व उस पारिस्थितिकी तंत्र में पाये जाने वाले जीवों की प्रजाति की संख्या पर निर्भर करता है, प्रजाति की संख्या जितनी अधिक होगी पारिस्थितिकी तंत्र उतना ही स्थायी होगा क्योंकि इन प्रजातियों के मदद से ही अर्जाग्रहण एवं संग्रहण, कार्बनिक पदार्थों की उत्पत्ति एवं विघटन, पारिस्थितिकी तंत्र में जल व पोषक तत्वों के चक्र को बनाये रखने (जल के प्रवाह का नियंत्रण) में सहायक, वायुमंडलीय गैसों की स्थिरता, जलवायु नियंत्रण आदि पारिस्थितिकी क्रिया-कलाप करने में सहायक होते हैं।
पारिस्थितिकी तंत्र में जितनी विविधता होगी प्रजातियों को प्रतिबुद्ध स्थितियों में रहने की संभावना व उत्पादकता भी उतनी ही अधिक होगी।

(ii) जैव-विविधता की आर्थिक भूमिका => (Economic Role of Biodiversity). मत्स्य, वनस्पतियों व पशुओं के अणुओं के संसाधन खाद्य फसलें, पशु, वन-संसाधन, मत्स्य, औषधि, अर्थात् प्रकृति प्रदत्त आर्थिक संसाधन मानव को जैव-विविधता के फलस्वरूप प्राप्त होते हैं।

इन सभी में फसलों की विविधता (Crop diversity) जैव-विविधता का महत्वपूर्ण भाग है, जिसे मानव अपने जीवन को बनाये रखने में सहा हो पाता है अर्थात् हम कह सकते हैं कि मानव जीवन का संतुलित चालन जैव-विविधता के फलस्वरूप ही संभव है।

Scientific role of Biodiversity जैव विविधता की वैज्ञानिक भूमिका जैव विविधता

जब कोई प्रजाति समाप्त होती है तो एक भूखला घूमने के जीवनसम प्रणाली के इस संपेदनशील संचालन की स्थिरता खतरे में पड़ जाती है और सबसे विच्युत प्राणी मानव अवबोधभावी प्रलय की ओर बढ़ता जाता है। जैव-विविधता पर मानवीय गतिविधि का प्रतिकूल प्रभाव कारकीर्ण रूप से बढ़ता जा रहा है। तथा संपोषित विकास

Loss of Biodiversity जैव-विविधता का ह्रास =>

जैव विविधता के नष्ट होने के प्राथमिक कारक — भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक एवं प्रौद्योगिकी कारक हैं। जिसका वर्णन निम्न है-

(i) वृद्धि जनसंख्या और आर्थिक विकास के कारण जैविक संसाधनों की बढ़ती

इससे संसार के विभिन्न भागों में प्रजातियों तथा उनके आवास स्थानों में कमी आई है। उष्णकटिबंधीय क्षेत्र जो विश्व के कुल क्षेत्र का मात्र एक चौथाई भाग है वहीं संसार की तीन चौथाई जनसंख्या रहती है। इस क्षेत्र के संसाधनों का दोहन क्रोन्मूलन अत्यधिक हुआ है। उष्ण-कटिबंधीय वर्षा वाले वनों में पृथ्वी का लगभग 50% प्रजातियाँ पाई जाती हैं जिनका विकास पूरे जीवमंडल के लिए हानिकारक होगा।

(ii) जैव-विविधता के सभी मूल्य की पहचान करने में आर्थिक बाजारों की विफलता।

(iii) शहरीकरण में वृद्धि संपत्ति के अधिकारों में परिवर्तन होने से संसाधनों के उपयोग को विनियमित करने में संसाधन विफलता =>

(क) आवासों का नष्ट होना, विभाजित होना और विध्वंसित होना।

अ(ख) अन्य संस्थाओं का अत्याधिक होना।

(ग) एक-जाल की वातावरण का प्रदूषित होना।

(iv) भौतिक संसाधनों का अत्यधिक निर्यात करने से सरकार की एक विफलता

(v) दीर्घकालिक मलबानु परिवर्तन के संकेत।

(vi) अस्थायिक प्रजातियों का प्रदूषण।

(vii) प्रदूषण एक अस्थायी आधार =>

प्रदूषित आधारों - जैसे सूख, बाढ़, ज्वालामुखी, दानाजल, धूल, आदि प्रकृति पर पाई जाते हैं। प्राणिजगत और जलजन्तुजगत की सभी प्रजातियों के अस्तित्व पर प्रभाव डालने का कारण बनता है।

(viii)

कीटाणुरहित और प्रदूषण और जलवायु परिवर्तनशील: अक्ष और कमजोर प्रजातियों को खतरा डालती हैं।

(ix) निरक्षर प्रजातियों का अल्प आवास से मूल प्रजातियों का हानि।

(x) कुछ जीवों के अति नस्लुकी के कारण निर्दमनपूर्ण अक्षय विकास का जोखिम प्रजातियों को खतरा डालती हैं।